Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

Original Article

ई.संचार माध्यम शिक्षा पद्धति : समाजशास्त्रीय विश्लेषण

मनोज कुमार[1],डॉ. संगीत कुमार[2]
[1](UGC-NET), शोध–छात्र, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, ति. माँ. भा. वि. वि. भागलपुर,
Email: manoj940440@gmail.com
[2]शोध निदेशक एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र, मारवाड़ी कॉलेज, भागलपुर, ति. माँ. भा. वि. वि. भागलपुर,
Email: sangeetkumar20@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170435
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 4|
Pp. 176-180
April 2025
Submitted: 05 Mar. 2025
Revised: 11 Mar. 2025
Accepted: 26 Apr. 2025
Published: 30 Apr. 2025

सारांश

ई.संचार माध्यम शिक्षा पद्धति वैश्विक शिक्षा प्रणाली में एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरी है। इस नवीन माध्यम ने यह दर्शाया है कि शिक्षार्थी दूर रहकर भी ज्ञान, शिक्षक, और संस्थानों के साथ तकनीक द्वारा किस प्रकार से जुड़ते हैं। वर्तमान परिदृश्य में ऑनलाइन शिक्षा द्वारा लाई गई पहुँच और नवाचार को समझना, साथ ही उन संरचनात्मक, सांस्कृतिक और पारस्परिक बदलावों को भी परखना जिन्हें यह जन्म देता है, समाजशास्त्रियों का आवश्यक कर्तव्य हो जाता है। प्रस्तुत आलेख में प्रकार्यवाद, संघर्ष सिद्धांत और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद जैसे प्रमुख समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों के माध्यम से ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति का बहुआयामी विश्लेषण किया गया है। प्रकार्यवादी दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि कैसे ऑनलाइन शिक्षा समाज की बदलती आवश्यकताओं को पूरा करती है, लचीलापन और समावेशन प्रदान करती है। वहीं संघर्ष सिद्धांतकार डिजिटल विभाजन द्वारा उत्पन्न शैक्षिक असमानताओं को उजागर करते हैं। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद वर्चुअल शिक्षण वातावरण में बातचीत, पहचान, और संचार की बदलती गतिशीलता पर प्रकाश डालता है। इन दृष्टिकोणों का आलोचनात्मक विश्लेषण करके यह आलेख ऑनलाइन शिक्षा के सामाजिक आयामों की व्यापक समझ प्रस्तुत करता है, जिससे नीति, शिक्षाशास्त्र और तकनीकी एकीकरण को दिशा मिल सके।

शब्द कुंजी– *प्रकार्यवाद, संघर्ष सिद्धांत, प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद, मुक्त शैक्षिक संसाधन मूक्स, इन्फ्लिबनेट, डेलनेट, ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज, विद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय, डिजिटल विभाजन, सांस्कृतिक पूंजी।*

परिचय

ई.संचार माध्यम शिक्षा पद्धति की उभरती और व्यापक स्वीकृति ने वैश्विक शिक्षा के स्वरूप में एक बड़ा बदलाव लाया है। सामान्यतः, ई.संचार माध्यम शिक्षा पद्धति को इंटरनेट आधारित तकनीकों के माध्यम से शैक्षणिक सामग्री प्रदान करने और पारंपरिक कक्षाओं के बाहर सीखने की सुविधा के रूप में परिभाषित किया गया है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा और व्यवसायिक प्रशिक्षण तक, डिजिटल प्लेटफार्मों ने भौगोलिक और समय संबंधी सीमाओं को पार करते हुए अभूतपूर्व शैक्षणिक अवसर प्रदान किए हैं।

शिक्षा केवल एक व्यक्तिगत प्रयास नहीं है, बल्कि एक सामाजिक संस्था भी है, और यही कारण है कि इसे समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा समाज की संरचना, सांस्कृतिक मानदंडों और शक्ति संबंधों से गहराई से प्रभावित होती है। विशेष रूप से कोविड–19 महामारी ने डिजिटल शिक्षा पर निर्भरता को उजागर किया है और विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच पहुंच, सहभागिता और परिणामों में गहरी असमानताओं को स्पष्ट किया है।

तीन प्रमुख समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण–प्रकार्यवाद (Functionalism), संघर्ष सिद्धांत (Conflict Theory) और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (Symbolic Interactionism) ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव को समझने के लिए मूल्यवान ढांचा प्रदान करता है। प्रकार्यवादी दृष्टिकोण यह समझने में मदद करता है कि शिक्षा कैसे सामाजिक स्थिरता और एकीकरण में योगदान करती है। संघर्ष सिद्धांत शिक्षा को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखता है जो सामाजिक असमानताओं को पुनः उत्पन्न करता है। वहीं प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद उस प्रक्रिया को समझने का प्रयास करता है जिसमें छात्र और शिक्षक अधिगम के वातावरण में अर्थ और पहचान बनाते हैं।

इन तीन दृष्टिकोणों के माध्यम से ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति के मजबूत एवं कमजोर पक्ष का विश्लेषण किया गया है, जिससे डिजिटल युग में शिक्षा की समावेशी और न्यायपूर्ण

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
मनोज कुमार, (UGC-NET) शोध छात्र, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, ति. माँ. भा. वि. वि भागलपुर

How to cite this article
कुमार,. मनोज ., & कुमार, . संगीत . (2025). ई.संचार माध्यम शिक्षा पद्धति: समाजशास्त्रीय विश्लेषण. Journal of Research & Development, 17(4), 176–180. https://doi.org/10.5281/zenodo.15575284

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.15575284
OPEN ACCESS

प्रकृति का मूल्यांकन किया जा सके।

ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति के मजबूत पक्ष

ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति कई ऐसे लाभ प्रदान करता है जो व्यापक समाजशास्त्रीय लक्ष्यों के साथ मेल खाते हैं, जैसे कि शिक्षा तक बेहतर पहुंच, लचीली शिक्षण संरचनाएँ, और सामाजिक परिवर्तन की संभावनाएँ। तीनों प्रमुख समाजशास्त्रीय विचारधाराएं – प्रकार्यवाद, संघर्ष सिद्धांत, और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद ऑनलाइन शिक्षा में विभिन्न मजबूत पक्ष को उजागर करने में हमारी सहायता करती है।

प्रकार्यवादी दृष्टिकोण (Functionalist Perspective)– प्रकार्यवादी सिद्धांतकार समाज को एक पारस्परिक रूप से जुड़ी हुई प्रणाली के रूप में देखते हैं जिसमें प्रत्येक भाग सामाजिक स्थिरता और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए काम करता है। शिक्षा, इस दृष्टिकोण से, महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य करती है जैसे कौशल विकास, सांस्कृतिक संचरण और सामाजिक एकीकरण। सामाजिक एकीकरण के माध्यम से विभिन्न सांस्कृतिक, जातीय, धार्मिक, आर्थिक या क्षेत्रीय पृष्ठभूमि से आने वाले लोग एकजुट, सहयोगी और समरस समाज का निर्माण करते हैं। शिक्षा सामंजस्य, समावेशन, साझा मानदंडों और सामाजिक एकता को बढ़ावा देती है। यह एक गतिशील और सतत प्रक्रिया है, जिसके लिए संरचनात्मक सुधारों (जैसे समान अवसर और प्रतिनिधित्व) और सांस्कृतिक प्रयासों (जैसे संवाद, सहानुभूति, और सम्मान) की आवश्यकता होती है। बढ़ती विविधता के इस युग में, सशक्त और टिकाऊ सामाजिक विकास के लिए सार्थक सामाजिक एकीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति इस दृष्टिकोण से कई महत्त्वपूर्ण पक्षों को विकसित करता हैः–

(क) पहुँच और समावेशन में वृद्धि– ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति पारंपरिक शिक्षा की सीमाओं जैसे भौगोलिक दूरी, गतिशीलता की बाधाएँ और कठोर समय–सारिणियों के बंधन को तोड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों, विकलांग व्यक्तियों या पारिवारिक/व्यावसायिक जिम्मेदारियों वाले छात्रों के लिए यह लचीलापन अत्यंत लाभकारी है। यह "समावेशन समाज के हर व्यक्ति को समान ज्ञान और कौशल से जोड़ने की प्रकार्यवादी सोच को मजबूत करता है।"[1]

(ख) आजीवन सीखने को प्रोत्साहन– प्रकार्यवाद यह मानता है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों को बदलते श्रम बाजार के लिए तैयार करना है। "ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म निरंतर कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण, और आत्म–गति पर आधारित अधिगम की सुविधा देता है, जो एक लचीले और अनुकूल कार्यबल के निर्माण में सहायक है।"[2]

(ग) सामाजिक परिवर्तन के प्रति त्वरित प्रतिक्रिया– कोविड–19 महामारी के दौरान, ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति ने शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने में अहम भूमिका निभाई। विशेषकर संकट की स्थिति में, इस प्रणाली की अनुकूलनशीलता एवं सामाजिक स्थिरता को बनाए रखने में इसकी उपयोगिता सराहनीय रही है।

संघर्ष सिद्धांत का दृष्टिकोण (Conflict Theory Perspective)– संघर्ष सिद्धांतकार समाज को एक ऐसे ढांचे के रूप में देखते हैं जिसमें विभिन्न वर्ग सीमित संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। शिक्षा, उनके अनुसार, अक्सर वर्गीय प्रभुत्व बनाए रखने का एक उपकरण बनती है, लेकिन ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति कुछ मायनों में सशक्तिकरण और पारंपरिक पदानुक्रम को चुनौती देने के अवसर भी प्रदान करता है, जो इस प्रकार है :–

(क) ज्ञान का लोकतंत्रीकरण– इंटरनेट के माध्यम से शैक्षणिक सामग्री की व्यापक पहुँच ने उन संस्थानों की एकाधिकारवादी पकड़ को चुनौती दी है जो पहले ज्ञान को नियंत्रित करते थे। ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (OERs- Open Educational Resources), विद्यालय अनुदान आयोग (UGC- University Grant Commission), मूक्स (MOOCs-Massive Open Online Courses), भारतीय राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI-National Digital Library of India), इन्फ्लिबनेट (INFLIBNET- Information and Library Network) और डेलनेट (DELNET- Developing Library Network) जैसे "माध्यम आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देते हैं।"[3]

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)– भारत में उच्च शिक्षा के नियमन और गुणवत्ता नियंत्रण के लिए स्थापित एक प्रमुख वैधानिक निकाय है। बदलते तकनीकी परिदृश्य और डिजिटल शिक्षा के प्रसार के साथ, यूजीसी ने ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने और नियमित करने के लिए अनेक ठोस पहल किए हैं। यह शैक्षणिक मानकों को स्थापित करके, तकनीक अपनाने को प्रोत्साहित कर रहा है, और लचीले शिक्षण ढांचे का समर्थन करके उच्च शिक्षा के भविष्य को अधिक सुलभ, विस्तार योग्य और समावेशी बनाने में सहायता कर रहा है। यूजीसी भारत में ऑनलाइन शिक्षा को मुख्यधारा में लाने में एक रणनीतिक और नियामक भूमिका निभाते हुए इसकी गुणवत्ता, मान्यता, और पहुँच सुनिश्चित करने में केंद्रीय भूमिका निभा रहा है।

मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources)– निःशुल्क उपयोग, पुनः उपयोग, अनुकूलन एवं साझा किए जाने वाली शैक्षिक सामग्री, उपकरण या माध्यम को मुक्त शैक्षिक संसाधन की संज्ञा दी जाती है। ई.–पुस्तकें, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वीडियो लेक्चर, पॉडकास्ट, शैक्षिक सॉफ्टवेयर, ओपन एक्सेस जर्नल्स, पीडीएफ, नोट्स एवं स्लाइड्स मुक्त शैक्षिक संसाधन को सर्वसुलभ बनाने हेतु E-PG Pathshala, Swayam, National Digital Library of India, National Repository of Open Educational Resources जैसे प्लेटफार्म विकसित किये गये हैं। इसके उपयोग से शिक्षक एवं छात्रों के लिए नवीन और विविध शैक्षिक सामग्री देश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों तक पहुंचाया जाता है। साथ ही, शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि के साथ समानता में वृद्धि होती है। छात्र इस माध्यम से स्वध्याय को प्रेरित होते हैं। शिक्षण प्रणाली का संचालन अत्यंत कम लागत में संभव होता है।

---

[1] Durkheim, E. (1956). **Education and Sociology**. Free Press.

[2] Giddens, A., Duneier, M., Appelbaum, R. P., & Carr, D. (2020). **Introduction to Sociology**. Seagull 10th Edition. W.W. Norton & Company.

[3] Bowles, S., & Gintis, H. (1976). **Schooling in Capitalist America: Educational Reform and the Contradictions of Economic Life**. Basic Books.

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

बृहद मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम (MOOCS- Massive Open Online Courses)– इस माध्यम से बड़ी संख्या में छात्र निःशुल्क या बहुत कम लागत में किसी भी स्थान से, किसी भी समय एक्सेस कर अध्ययन कर सकता है। इसका निर्माण एवं संचालन प्रतिष्ठित संस्थान, विश्वविद्यालय एवं शैक्षिक प्लेटफार्म की सहायता से किया जाता है। Swayam, Coursera, Tedx, Udemy, Future Learn एवं Khan Academy मूक्स के प्रमुख उदाहरण हैं। इसके अंतर्गत वीडियो, क्वीज, पीडीएफ के माध्यम से छात्र पाठ्यक्रम पूर्ण करते हैं। ये संस्थान निःशुल्क या सशुल्क सर्टिफिकेट प्रदान करते हैं। भारत में मूक्स प्लेटफार्म के रूप में Swayam पर विद्यालय से लेकर स्नातकोत्तर तक जबकि Swayam-Prabha पर डीटीएच एवं टीवी चैनल के माध्यम से शैक्षिक सामग्री का प्रसारण किया जाता है। इंजीनियरिंग व उच्च शिक्षा के लिए E-PG Pathshala, NPTEL का उपयोग किया जाता है। मूक्स के माध्यम से ग्रामीण एवं दूर–दराज अर्थात सीमांत क्षेत्र के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बहुत ही कम लागत में जीवन पर्यंत सीखने की सुविधा एवं कौशल विकास के लिए विविध पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं, जो इसके मुख्य लाभ हैं।

भारतीय राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI-National Digital Library Of India)– यह एक व्यापक डिजिटल मंच है जो शैक्षणिक संसाधनों की विशाल श्रृंखला तक निःशुल्क पहुँच प्रदान करता है। इसे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) खड़गपुर द्वारा विकसित किया गया है और शिक्षा मंत्रालय द्वारा **सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा पर राष्ट्रीय मिशन** (NMEICT- National Mission on Eductaion through Information and Communication Technology) के तहत प्रायोजित किया गया है। NDLI का उद्देश्य एकल विंडो मंच के माध्यम से सभी शिक्षार्थियों को स्तरीय शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराना है। NDLI की विशाल शैक्षणिक सामग्री को इसके आधिकारिक वेबसाइट https://ndl.iitkgp.ac.in पर विज़िट कर एक्सप्लोर किया जा सकता है। पंजीकरण निःशुल्क है और यह मंच सभी उपयोगकर्ताओं के लिए खुला है– चाहे वे छात्र हों, शिक्षक, शोधकर्ता या आम जन। परीक्षा की तैयारी, शोध कार्य एवं ज्ञान का विस्तार में NDLI एक बहुमूल्य संसाधन के रूप में सहायक है। **NDLI क्लब–** ज्ञान की संस्कृति और साझा अधिगम को बढ़ावा देने के लिए NDLI ने विभिन्न संस्थानों में NDLI क्लब स्थापित किए हैं। ये क्लब कार्यशालाओं, वेबिनार, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं और अध्ययन सत्रों जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, जिससे छात्रों और शिक्षकों के बीच सहयोगात्मक अधिगम और कौशल विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

इन्फ्लिबनेट (INFLIBNET- Information and Library Network)– यह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के अंतर्गत एक स्वायत्त अंतर–विश्वविद्यालय केंद्र (Inter-University Centre) है, जो शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन कार्य करता है। इसकी स्थापना 1991 में हुई थी और यह गांधीनगर, गुजरात में स्थित है। यह केंद्र भारत में अकादमिक पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण और विद्वानों को शैक्षणिक संसाधनों की पहुँच बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। INFLIBNET केंद्र एक विशेष पुस्तकालय है, जिनका मुख्य फोकस कंप्यूटर विज्ञान, संचार, सूचना और पुस्तकालय विज्ञान पर है। यह पुस्तकालय पूरी तरह सोल (SOUL- Software for University Libraries) सॉफ्टवेयर द्वारा स्वचालित है और इसमें संदर्भ सहायता, दस्तावेज़ डिलीवरी, अंतर–पुस्तकालय ऋण और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों तक पहुँच जैसी सेवाएं प्रदान की जाती है।

डेलनेट (DELNET- Developing Library Network)– यह भारत का एक प्रमुख संसाधन–साझाकरण पुस्तकालय नेटवर्क है, जिसका मुख्यालय जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) परिसर, नई दिल्ली में स्थित है। इसकी स्थापना 1988 में दिल्ली पुस्तकालय नेटवर्क के रूप में हुई थी और इसे 1992 में एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत किया गया। DELNET ने अब अपनी पहुँच को भारत के 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों के 9,000 से अधिक संस्थानों तक विस्तारित कर लिया है, और कुछ अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को भी जोड़ लिया है।

विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों, और चिकित्सा अस्पतालों जैसे संस्थान DELNET के सदस्य बन सकते हैं। सदस्यता प्राप्त करने पर संस्थान DELNET की विस्तृत सेवाओं और संसाधनों जैसे कि अंतर–पुस्तकालय ऋण, यूनियन कैटलॉग, और डिजिटल पोर्टलों का उपयोग कर सकते हैं। सदस्य बनने या संसाधनों तक पहुँचने के लिए इसकी वेबसाइट https://delnet.in पर विज़िट किया जा सकता है। DELNET भारत में पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण और नेटवर्किंग में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, और शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थानों के बीच ज्ञान साझाकरण एवं संसाधन अनुकूलन के लिए एक सहयोगी वातावरण तैयार कर रहा है।

इस प्रकार उपर्युक्त ई–शिक्षा संस्थानों के माध्यम ज्ञान के लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा मिला है और ज्ञान सर्व–सुलभ हुआ है।

(ख) भौगोलिक सीमाओं की समाप्ति– पूर्व में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल शहरों एवं विकसित क्षेत्रों में उपलब्ध हुआ करती थी परंतु ऑनलाइन शिक्षा ने गांव, दूर दराज एवं पहाड़ी क्षेत्रों तक शैक्षिक सामग्री को उपलब्ध करा दिया है। यूट्यूब के माध्यम से आईआईटी या हार्वर्ड यूनिवर्सिटी जैसे उच्च स्तर के शिक्षा संस्थानों के व्याख्यान को घर बैठे सुना जा सकता है।

(ग) आर्थिक असमानता में कमी– ई. शिक्षा प्रणाली द्वारा गरीब तबके के छात्र बिना भारी खर्च के अच्छी शिक्षा प्राप्त करते हैं क्योंकि पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में विश्वविद्यालय शुल्क, यात्रा, किताबें बहुत महंगी होती हैं परंतु जिसके विपरीत ई–शिक्षा प्रदान करने वाले कई संस्थान निशुल्क या न्यूनतम लागत में स्तरीय पठन सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

(घ) लिंग आधारित बाधाओं में सुधार– ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर सर्व–सुलभ हुआ है। समाज में लड़कियों या महिलाओं को कई कारणों से घर से बाहर पढ़ने की अनुमति नहीं होती थी परंतु वर्तमान समय में वे घर बैठे देश एवं विदेश के अग्रणी एवं प्रसिद्ध शिक्षण संस्थानों से डिग्री एवं सर्टिफिकेट प्राप्त कर सकती हैं।

(ङ) विकलांग जनों के लिए अनुकूल– शारीरिक रूप से असमर्थ व्यक्तियों के लिए विद्यालय या महाविद्यालय जाना कठिन होता है। ऑडियो या वीडियो व्याख्यान, सबटाइटल्स, स्क्रीन रीडर सपोर्ट जैसे टूल्स से उन्हें सीखने में आसानी होती है।

(च) सामाजिक भेदभाव में कमी– ऑनलाइन वर्गकक्ष में पहचान सीमित होती है, छात्रों के साथ व्यक्तिगत मेलजोल ना के बराबर होता है। जाति, वर्ग, रंग, धर्म आदि के आधार पर जो भेदभाव होता था, ऑनलाइन वर्गकक्ष में यह खत्म हो गया है। अब प्रत्येक छात्र को ई–शिक्षा पद्धति के अंतर्गत समान अवसर प्राप्त होता है।

(छ) वयस्क और कामकाजी लोगों के लिए लचीलापन– पूर्व में पारिवारिक या सामाजिक कारणों से शिक्षा पूर्ण नहीं करने वाले अब घर की जिम्मेदारी निभाते हुए या नौकरी करते हुए ऑनलाइन अध्ययन कर सकते हैं।

(ज) वैश्विक ज्ञान तक पहुंच – भारतीय छात्र हो या विदेशी, किसी भी संस्थान के साथ ऑनलाइन जुड़कर शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। भारतीय छात्र एमआईटी, हार्वर्ड या स्टैनफोर्ड जैसी संस्थाओं के साथ जुड़कर उन संस्थानों के पाठ्यक्रम पूर्ण कर सकते हैं, जिससे ज्ञान की समानता में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिली है। ऑनलाइन शिक्षा ने पारंपरिक सामाजिक अवरोधों जैसे स्थान, आर्थिक स्थिति, लिंग, विकलांगता और भेदभाव को काफी हद तक खत्म किया है, इससे शिक्षा अधिक समावेशी, सुलभ और समानता पूर्ण हुई है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

(झ) हाशिए के समूहों के लिए वैकल्पिक मार्ग– महिलाएं, अल्पसंख्यक समुदाय, और ग्रामीण क्षेत्र के लोग पारंपरिक शैक्षणिक संस्थानों में अक्सर भेदभाव का सामना करते हैं। ऑनलाइन शिक्षा इन बाधाओं को खत्म कर ऐसे वर्गों को उन्नति के नए और प्रमाणिक अवसर प्रदान करती है।

(ञ) पारंपरिक सत्ता संरचनाओं को चुनौती– ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पारंपरिक संस्थाओं के अधिकार को विकेंद्रीकृत करता है। छात्र विभिन्न दृष्टिकोणों से जुड़कर प्रमुख विचारधाराओं को चुनौती देने में सक्षम होते हैं, जिससे पारंपरिक पाठ्यक्रम में निहित प्रभुत्ववादी दृष्टिकोण बाधित होता है।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (Symbolic Interactionism)– प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का केंद्र बिंदु सूक्ष्म स्तर पर होने वाली पारस्परिक क्रियाएँ और संप्रेषण के माध्यम से अर्थ का निर्माण है। ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति में यह संप्रेषण डिजिटल उपकरणों के माध्यम से होता है, जिससे शैक्षणिक अनुभवों में कई सकारात्मक बदलाव आते हैं:–

(क) वैयक्तिकृत और छात्र –केंद्रित शिक्षण– डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म विद्यार्थियों को उनकी गति के अनुसार सीखने की सुविधा प्रदान करता है। वे सामग्री को दुबारा देख सकते हैं, लक्षित फीडबैक प्राप्त कर सकते हैं और अपनी जरूरत के अनुसार विभिन्न प्लेटफ़ॉर्मों से जुड़ सकते हैं, जिससे गहन समझ और रुचि का विकास होता है।

(ख) बातचीत और पहचान निर्माण के नए रूप – ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति वातावरण छात्रों को चर्चा मंच, अवतार और मल्टीमीडिया परियोजनाओं के माध्यम से अपने विचारों को प्रकट करने के वैकल्पिक तरीके प्रदान करता है। कई बार ये रूप "पारंपरिक कक्षा से अधिक समावेशी और आत्म–अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने वाले होते हैं।"[4]

(ग) सामाजिक बाधाओं में कमी– ऑनलाइन शिक्षा कई बार उन सामाजिक चिंताओं को कम करती है जो जाति, लिंग, या शारीरिक स्वरूप से जुड़ी होती है। गुमनाम या टेक्स्ट–आधारित संवाद के माध्यम से छात्र अधिक स्वतंत्रता से शिक्षण प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं, जिससे सहभागिता में समानता आ सकती है।

ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति के कमजोर पक्ष

ऑनलाइन शिक्षा ने कई अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से इसकी कई कमजोरियाँ भी हैं। ये कमजोरियाँ सामाजिक संरचना, वर्गीय विभाजन, सांस्कृतिक दूरी, और पारस्परिक संप्रेषण से जुड़ी हुई है। प्रकार्यवाद, संघर्ष सिद्धांत और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के तीनों दृष्टिकोण से इन समस्याओं को गहरे अर्थों में समझा जा सकता है।

प्रकार्यवादी आलोचना (Functionalist Critique)– प्रकार्यवादी दृष्टिकोण सामाजिक व्यवस्था और एकीकरण पर बल देता है। इस दृष्टि से ऑनलाइन शिक्षा कुछ क्षेत्रों में स्थिरता लाती है, लेकिन कुछ अन्य सामाजिक कार्यों को बाधित भी करती है :–

(क) सामाजिक एकीकरण में कमी– पारंपरिक कक्षाओं में छात्रों को सामाजिक मानदंड, सांस्कृतिक प्रतीकों और सहयोगात्मक व्यवहार सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं। ऑनलाइन परिवेश में "सामाजिक सहभागिता सीमित होने के कारण ये कार्य बाधित होते हैं, जिससे सामाजिक अलगाव और एकाकीकरण की समस्या उत्पन्न होती है।"[5]

(ख) भूमिका भ्रम और अनुशासन की कमी– ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षक और छात्र की पारंपरिक भूमिकाओं में अस्पष्टता आ जाती है। शारीरिक अनुपस्थिति के कारण कक्षा अनुशासन, समयनिष्ठा और प्रत्यक्ष निगरानी में बाधा आती है, जिससे भूमिका भ्रम और अनुशासनहीनता का खतरा बढ़ता है।

संघर्षवादी परिप्रेक्ष्य से आलोचना (Conflict Theory Critique)– संघर्षवादी दृष्टिकोण विशेष रूप से ऑनलाइन शिक्षा के उस पक्ष को उजागर करता है जो सामाजिक असमानता को मजबूत करता है :–

(क) डिजिटल विभाजन (Digital Divide)– यह व्यक्तियों, परिवारों या समूहों के बीच की तकनीकी खाई को उजागर करता है। इसका अर्थ यह है कि समाज के कुछ वर्गों की पहुँच डिजिटल तकनीकों जैसे– इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल डिवाइस आदि तक है जबकि समाज में अनेक वर्ग ऐसे हैं जिनके पास यह सुविधा नहीं है। परिणामतः "आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों को इन सुविधाओं की कमी के कारण ऑनलाइन शिक्षा से पूरी तरह लाभ नहीं मिल पाता है, जिससे सामाजिक असमानता और मजबूत होती है।"[6] स्पष्टतः सभी छात्रों के पास इंटरनेट, डिजिटल डिवाइस एवं शांत अध्ययन वातावरण समान रूप से उपलब्ध नहीं है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह केवल तकनीकी पहुँच का विषय नहीं है, बल्कि यह पहले से मौजूद सामाजिक असमानताओं जैसे वर्ग, जाति, लिंग, भूगोल और शिक्षा आधारित भेदभाव को प्रतिबिंबित करता है और इन असमानताओं को भी मजबूत बनाता है। यह गंभीर सामाजिक मुद्दा है। इस खाई को पाटने के लिए सामाजिक ढाँचों में बदलाव, समान डिजिटल शिक्षा का सुनिश्चित करना एवं समावेशी नीतियों का विकास करना होगा ताकि सभी वर्गों के लोग डिजिटल युग में समान रूप से भाग ले सकें।

(ख) सांस्कृतिक पूँजी और शिक्षा तक असमान पहुँच– फ्रांस के समाजशास्त्री पियरे बोर्दियू के अनुसार, सामाजिक वर्गों के पास अलग–अलग मात्रा में 'सांस्कृतिक पूँजी' होती है। किसी व्यक्ति या समूह के पास मौजूद ज्ञान, शिक्षा, भाषा शैली, कौशल, सामाजिक व्यवहार, कलात्मक अभिरुचि एवं संस्कृति संबंधी समझ, जिससे समाज में उन्हें प्रतिष्ठा, अवसर तथा सामाजिक लाभ प्राप्त होते हैं, सांस्कृतिक पूंजी का उदाहरण है। सांस्कृतिक पूंजी को सर्वप्रथम फ्रांसीसी समाजशास्त्री पियरे बोर्दियू ने अवधारणा रूप में प्रयुक्त किया। सांस्कृतिक पूंजी बोर्दियू के अनुसार तीन प्रकार की होती है :–

अवयव रूपेण सांस्कृतिक पूंजी (Embodied Cultural Capital)– इस प्रकार की सांस्कृतिक पूंजी के अंतर्गत व्यक्ति की अंतर्निहित भाषा, ज्ञान आचार–व्यवहार आते हैं।

वस्तुगत सांस्कृतिक पूंजी (Objectified Cultural Capital)– इनमें किताबें, पेंटिंग, वाद्य–यंत्र, तकनीकी उपकरण जैसे मूर्त सांस्कृतिक वस्तुएं सम्मिलित है, जिनका उपयोग, ज्ञान अर्जन हेतु किया जाता है।

---

[4] Blumer, H. (1969). **Symbolic Interactionism: Perspective and Method**. University of California Press.

[5] Durkheim, E. Op.Cit., p.66.

[6] Bourdieu, P. (1986). The forms of capital. In J. Richardson (Ed.), **Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education** (pp. 241–258). Greenwood.

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

संस्थागत सांस्कृतिक पूंजी (Institutionalized Cultural Capital)– किसी व्यक्ति की योग्यता को आधिकारिक रूप से मान्यता देने वाली शैक्षिक उपाधियां, प्रमाण पत्र, डिग्री संस्थागत सांस्कृतिक पूंजी का रूप है।

सांस्कृतिक पूंजी समाज में सांस्कृतिक संसाधनों का असमान वितरण को दर्शाती है और यह प्रकाश डालती है कि किस प्रकार से असमानता शिक्षा, रोजगार और सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करती है। सांस्कृतिक पूंजी स्वयं में स्वतंत्र एवं प्रभावशाली सामाजिक शक्ति है, परंतु यह आर्थिक पूंजी से जुड़ी हुई होती है। "तकनीकी साक्षरता, अंग्रेजी भाषा की दक्षता और स्व–अनुशासन जैसी योग्यताएँ उच्च वर्गों में अधिक पाई जाती है जिससे वे ऑनलाइन शिक्षा का अधिक लाभ उठा पाते हैं।"[7]

(ग) शिक्षा का बाज़ारीकरण और उपभोक्तावाद– ऑनलाइन शिक्षा के बढ़ते निजीकरण और पाठ्यक्रमों की बिक्री से शिक्षा उपभोक्ता वस्तु बन गई है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता की तुलना में लाभ कमाने पर अधिक ध्यान जाता है, जो शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य को कमजोर करता है।

प्रतीकात्मक अंतः क्रियावादी दृष्टिकोण से आलोचना– ऑनलाइन शिक्षा डिजिटल माध्यम, संचार और पहचान निर्माण की प्रक्रियाओं को भी प्रभावित करता है

(क) भावनात्मक जुड़ाव की कमी– ऑनलाइन माध्यमों में चेहरा–मोहरा, शारीरिक भाषा और सामाजिक संकेत सीमित हो जाते हैं, जिससे शिक्षक और छात्र के बीच भावनात्मक जुड़ाव मजबूत नहीं हो पाता है। "यह न केवल संवाद को प्रभावित करता है, बल्कि सीखने की प्रेरणा और संतुष्टि को भी कम कर सकता है।"[8]

(ख) संवाद की सतही प्रकृति– चैट, ईमेल और वीडियो कॉल जैसे माध्यम संक्षिप्त और रुक–रुक कर होने वाले संवाद को बढ़ावा देते हैं। इससे गहरी अकादमिक चर्चाओं, तर्क–वितर्क और जटिल विषयों की समझ में बाधा आती है।

(ग) सामाजिक उपस्थिति की कमी और पहचान संकट– ऑनलाइन कक्षाओं में छात्रों को सामाजिक रूप से 'अदृश्य' होने का अनुभव हो सकता है। यह पहचान और आत्म–मूल्यांकन को प्रभावित करता है, जिससे आत्म–संयम में कमी आती है।

निष्कर्ष :

ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति ने शिक्षा की दुनिया में एक नया युग प्रारंभ किया है, जहाँ पारंपरिक सीमाएँ टूट रही हैं और तकनीक के माध्यम से नवाचार और पहुँच के नए द्वार खुल रहे हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि ऑनलाइन शिक्षा न केवल सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है, बल्कि व्यापक सामाजिक संरचनाओं, संबंधों और अवसरों को भी बदलती है।

प्रकार्यवादी दृष्टिकोण से, यह शिक्षा की पहुँच को बढ़ाने, सामाजिक समावेशन को प्रोत्साहित करने एवं बदलती सामाजिक जरूरतों के प्रति लचीलापन प्रदर्शित करने का एक प्रभावी माध्यम है। यह कार्यबल को आधुनिक बनाने, समय एवं स्थान की सीमाओं को खत्म करने और जीवनभर के शिक्षण को बढ़ावा देने में सहायक है।

वहीं, संघर्ष सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि ऑनलाइन शिक्षा उन असमानताओं को भी मजबूत कर सकता है, जो समाज में पहले से मौजूद है। डिजिटल विभाजन, आर्थिक और सांस्कृतिक पूँजी की असमानता और शिक्षा के बाजारीकरण जैसे मुद्दे सामाजिक न्याय के लक्ष्य में बाधा उत्पन्न करते हैं।

प्रतीकात्मक अंत :क्रियावाद के अनुसार, ई. संचार माध्यम शिक्षा पद्धति में सामाजिक संपर्क की प्रकृति बदल जाती है। यद्यपि यह नई अभिव्यक्ति के रूपों को जन्म देता है, किंतु यह भावनात्मक जुड़ाव और सामाजिक उपस्थिति को सीमित कर सकता है, जिससे छात्रों की पहचान और सीखने की प्रेरणा प्रभावित होती है।

ऑनलाइन शिक्षा समाजशास्त्रीय दृष्टि से कई महत्त्वपूर्ण ताकतों का प्रतिनिधित्व करती है, लेकिन इसके प्रभावों का समग्र मूल्यांकन यह दिखाता है कि तकनीकी प्रगति के साथ–साथ सामाजिक समानता, सांस्कृतिक समावेशन और पारस्परिक संबंधों की गुणवत्ता को भी प्राथमिकता देना आवश्यक है। भविष्य के लिए नीति निर्माताओं, शिक्षकों, और तकनीकी रचनाकारों को यह समझने की आवश्यकता है कि ऑनलाइन शिक्षा की प्रभावशीलता न केवल तकनीक पर, बल्कि इसके समाजशास्त्रीय पक्षों पर भी निर्भर करती है।

संदर्भ:

1. Blumer, H. (1969). **Symbolic Interactionism: Perspective and Method**. (pp.169). University of California Press.
2. Bourdieu, P. (1986). The forms of capital. In J. Richardson (Ed.), **Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education** (pp. 241–258). Greenwood.
3. Bowles, S., & Gintis, H. (1976). **Schooling in Capitalist America: Educational Reform and the Contradictions of Economic Life.** (pp.129) Basic Books.
4. Durkheim, E. (1956). **Education and Sociology**. (pp.64). Free Press.
5. Giddens, A., Duneier, M., Appelbaum, R. P., & Carr, D. (2020). **Introduction to Sociology.** (pp.156) Seagull 10th Edition. W.W. Norton & Company.
6. Turkle, S. (2011). **Alone Together: Why We Expect More from Technology and Less from Each Other**. (pp.249) Basic Books.

[7] Ibid., p.68.

[8] Turkle, S. (2011). **Alone Together: Why We Expect More from Technology and Less from Each Other**. Basic Books.